खाँ ने विद्रोह तक कर दिया। महिला होने के वजह से सम्पूर्ण साम्राज्य पर नियंत्रण रखने में दिक्कत होती थी।

जहाँगीर अस्वस्थ होकर 1627 ई० मे चल बसा और सत्ता संघर्ष शाहजहाँ और नूरजहाँ के बीच चली। जिसमें नूरजहाँ असफल रही। उसने जहाँगीर की याद में एक मकबरा बनवाया और पेंशन प्राप्त कर शेष जीवन शांति पूर्वक व्यतीत करती हुई 1645 ई0 को इस धराधाम से चल बसी। वस्तुतः मध्यकालीन भारतीय इतिहास की वह एक अद्वितीय महिला थी।

संदर्भ सूची ––

1. मुगल कालीन भारत–डॉ0 आर्शीवादी लाल श्रीवास्तव
2. मध्यकालीन भारत–डॉ० राजीव नयन प्रसाद
3. मेडियावल इंडिया–डॉ0 सतीश चन्द्र
4. हिस्ट्री ऑफ जहाँगीर–डॉ0 बेनीप्रसाद

कोसी क्षेत्र के लोगों का जनजीवन– एक अध्ययन

डॉ0 नरेश मोहन *

मिथिला प्राचीन काल से ही अपनी विशेषताओं के लिए प्रख्यात रही है। सामाजिक, बौद्धिक, सांस्कृतिक आदि सभी क्षेत्रों में इसका अपना अस्तित्व रहा है। धर्मग्रंथों में उल्लिखित आचार–विचार, रीति–नीति आदि पर इसकी संस्कृति आधारित रही है। यद्यपि भारत वर्ष में ज्ञान– विज्ञान एवं पारम्परिक शिक्षा का केन्द्र काशी रही है किन्तु धर्मशास्त्र एवं दर्शन की भूमि मिथिला ही रही है। आज भी कहा जाता है कि यहाँ हर कंकड़ में शंकर का वास है। परिणामतः इतने तर्क–विर्तक विभिन्न पहलुओं पर होते हैं कि सन्देह की गुंजाइस नहीं रह जाती। मिथिला के पारम्परिक खाद्य एवं पेय का अनुशील से भी इसकी यथार्थता की पुष्टि होती है। विभिन्न शताब्दी के प्राप्त ग्रंथों में खान–पान का किसी न किसी रूप में उल्लेख है ही। अद्यावधि इसकी प्रासंगिकता है। यहाँ के इतिहास का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि इस क्षेत्र में मुसलमान, भोट, चीनी, अंग्रेज आदि आक्रमणों से इनकी संस्कृति का कुछ न कुछ प्रभाव यहाँ की संस्ति इतिहास पर पड़ा। तदनुसार भी मिथिला के खाद्य एवं पेय प्रभावित हुए परन्तु मूल खाद्य–पेय ज्यों के त्यों बनी रहे। ज्योतिरीश्वर, चण्डेश्वर, विद्यापति, वाचस्पति आदि विद्वानों के ग्रंथों में भी खाद्य की चर्चा मिलती है। इतिहास के आधुनिक ग्रंथों में तो इसकी भरमार है।

मिथिला में विशिष्ट खाद्य एवं पेय के उद्‌भव के कई कारण हैं। मिथिला की भौगोलिक स्थिति पर विचार करें। उतर में हिमालय से लेकर दक्षिण में गंगा तक तथा पूर्व में कोशी से पश्चिम में गण्डक नदी तक का इसका पौराणिक क्षेत्र है। किन्तु आज कोशी के पूरब का क्षेत्र तथा गंगा के दक्षिण मुंगेर, भागलपुर और संथाल परगना के देवघर क्षेत्र भी इसी में सम्मिलित माना जाता है। यह क्षेत्र हिमालय के दक्षिण समतल भू–भाग में अवस्थित है। यहाँ नहीं तो अधिक ठंढ पड़ती है और न अधिक गर्मी ही। गंगा, गंडक, कोशी, कमला बागमती, धेनुरा, अमृता, लखनदेई आदि नदियाँ इसे अनवरत रूप से सिंचित करती रहती हैं। इसलिए मिथिला के भू–भाग को नदी–मातृक क्षेत्र कहा गया है। यहाँ कि भूमि अत्यधिक

***पी–एच0 डी0 भूगोल विभाग, बी0 एन0 एम0 यू0 मधेपुरा।**

उर्वर है और सनातनकाल से ही यहाँ लोग विद्या एवं कृषि पर निर्भर करते हैं। समशीतोषण जलवायु एवं उर्वर क्षेत्र रहने के कारण यहाँ नाना प्रकार के अन्न, फल, कन्दमूल आदि उपजती हैं। यहाँ सभी व्यक्ति सभी वस्तु एक समान उपयोग नहीं करते हैं।

धर्मशास्त्र में वर्णित वर्णाश्रम धर्म के अनुसार प्रत्येक वर्ग के लोगों के लिए अलग–अलग प्रकार का प्रावधान रहा है। यहाँ के लोग सामान्यतः चावल, चूड़ा, दूध, दही, घी, चीनी, जौ आदि खाते हैं। ओल, मछली, मांस आदि भी हविष्य माने जाने के कारण खाद्य की श्रेणी में है। विभिन्न संस्कारों में अलग–अलग खान–पान का विधान है। परन्तु दही–चूड़ा ही शुद्ध भोजन माना गया है। इसे वैज्ञानिक भी सुपाच्य मानते है। यहाँ इसे देव भोजन कहा जाता है। विभिन्न यज्ञों के बाद भोज में दही–चूड़ा ही प्रशस्त रहा है। सामान्यतः मछली–भात एवं पान–मखान तो अतिथ्य सत्कार से ही सम्बद्ध है। खाद्य एवं पेय भी यहाँ की आर्थिक जर्जरता का शायद कारण हो। जैसे मिथिला तीक्ष्ण बुद्धि के होते हैं, तर्कशक्ति इनमें अधिक होती है वैसे ही ये भोजन के अधिक शौकीन भी होते हैं। आतिथ्य सत्कार तो ये ऋण लेकर भी करते हैंः जल, आसन एवं प्रियवचन से आह्लादित करना तो मैथिल का संस्कार ही है। शक्ति की उपासना एवं यज्ञादि कार्यरत व्यक्ति सोमरस, शक्तिरस, मधुरस. भांग, गांजा आदि भी ग्रहण करते रहे हैं। बाद में हुक्का एवं अन्य प्रकार के धूम्रपान भी जुटाये गये।

मैथिल के प्राचीन ग्रंथों में ज्योतिरीश्वर का वर्णरत्नाकर विशिष्ट स्थान रखता है। इनकी दूसरी पुस्तक धूर्तसमागमनाटिका भी है। प्रा.तपैंगलम् एवं अन्याय निबन्ध भी इस विषय पर प्रकाश डालते हैं। इन ग्रंथों के अनुसार मिथिला का प्रमुख भोजन, भात, दाल, तरकारी, फल एवं दूध है। प्रा.तगलम्के अनुसार जो गृहिणी अपने पति को प्रतिदिन केला के पत्ते पर भात और घी देती है वह भाग्य–शालिनी होती है। इनके अतिरिक्त मछली और कई प्रकार की सब्जियों की भी चर्चा की गई है। मिथिलाचंल में आज भी कहावत प्रचलित हैः "जाहि भोजन के प्रारम्भ में घी नहिं आ अन्त में दही नहिं ओ भोजन, भोजन नहिं गिरव कहि।" ज्योतिरीश्वर ने वर्णरत्नाकर' में खाद्य सामग्री की सूची प्रस्तुत किया है। कई जगहों से संगृहीत करने पर निम्नलिखित खाद्य सामग्री का उल्लेख मिलता है। कई जगहों से संगृहीत करने पर निम्नलिखित खाद्य सामग्री का उल्लेख मिलता है : चूडा, चावल, मूंगबा, लबी, सरूआर, मधुकूपी, मांस, फेना तिलवा, सिरोला, सिरसा, खिरनी, झिलिय, नड़श्वी, भूँजा, फरही, मेतिया, अमृतकुण्ड आदि। दही के सम्बन्ध में चर्चा के क्रम में ज्योतिरीश्वर लिखते हैं :

एगारह आंगुर बरल पललि, काँचे कर्पूर लेसन देल,
सनदधि शरतक चन्द्रमा पूर्णिमा प्रायः अमूत जिन स्वादे दर्शने पवित्र,
कटइतें क्रान्ति, टुडइते कॅपतिपात्र देयिते थमति।।

सृष्टि के मूल आधार जल में अमृत और अग्नि दोनों तत्वों की विद्यमानता होती है। नदी मातृका कमला अमृत कलशधारिणी है तो कोशी अग्नि तत्व की वाहिका। कोशी के ताण्डव से जनपद का भूगोल बिगड़ जाता है, इतिहास के तत्व भूगर्भस्थ हो जाते हैं और संस्ति विश्रृंखलित। यदि कुछ अवशिष्ट रह जाता है तो दुःखी पीड़ित एवं संतप्त लोगों को गाथाएं। अतः शोधप्रज्ञों के लिए प्राचीन साहित्य, ऐतिहासिक श्रुतियां, कलात्मक पुरावशेष एवं कोशी पूजन की लोक पराओं को रेखांकित करते हुए उनका अनुशीलन चुनौती की विषय बन गया है।

प्राचीन संस्कृत वाङ्गमय और अभिलेखों में कोशी के प्रवाह क्षेत्र का भव्य रूपांकन हुआ है। वाल्मीकि रामायण, महाभारत, विष्णुपुराण, वाराहपुराण, श्रीमद्भागवत, कुमारसंभव आदि में ऋषि–मुनियों के तटवर्ती आश्रम, नदी तीर्थ, संगम स्नान आदि के अतिरिक्त ताम्र अभिलेख (गुप्तकाल) आदि इसके ज्वलंत उदाहरण है। डॉ0 प्रकाश चरण प्रसाद ने इसे "कुशिक संस्कृति'' का अभिलेखिय प्रमाण कहा है (कोशी महोत्सव)। बिहार और नेपाल की अंतर्राष्ट्रीय सीमा के आर पार वराह क्षेत्र (वराह विष्णु) भारदहर (कंकाली), सखरा (छिन्नमस्ता), आदि एवं भारतीय सीमांत क्षेत्र के गढ़ वरूआरी, (दशमहाविद्या), विराटपुर (चण्डी), सिंहेश्वर (शिव), शाहमडहरा (दुर्गा), नयानगर (चन्दनवन), वंशीरौता (भगवती), पिपरा, सिरीपुर–मिलकी, गाजी पैता, वनगाँव–महिषी (तारा), कन्दाहा (सूर्य), वौरनेय (नाग) आदि जैसे पुरावकुल स्थलों की भरमार है, जिनके व्यापक परिप्रेक्ष्य में कोशी संस्ति उजागर होगी।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. जॉन हाल्टन, बिहार, दी हर्ट आफ इंडिया, पृ0–122
2. पी0 सी0 घोष, एक प्रीहेंसिवट्रीटाइन आन नार्थ बिहार प्रोब्लेम्स, पटना, 1984, पृ0–96
3. कालिदास, कुमारसंभव, सर्ग 6, श्लोक–33
4. डी0 सी0 सरकार, एपिग्राफिकाइंडिका, खंड 154, पृ0–56
5. उपेन्द्र ठाकुर, हिस्ट्रीआफमिथिला, पृ0–221–222
6. 'बनगाँव प्लेट आफ विग्रहपाल 111', उपरोक्त, पृ0–56

*****